DEEBALI

WALL-MAGAZINE

2023 - 2024(I)

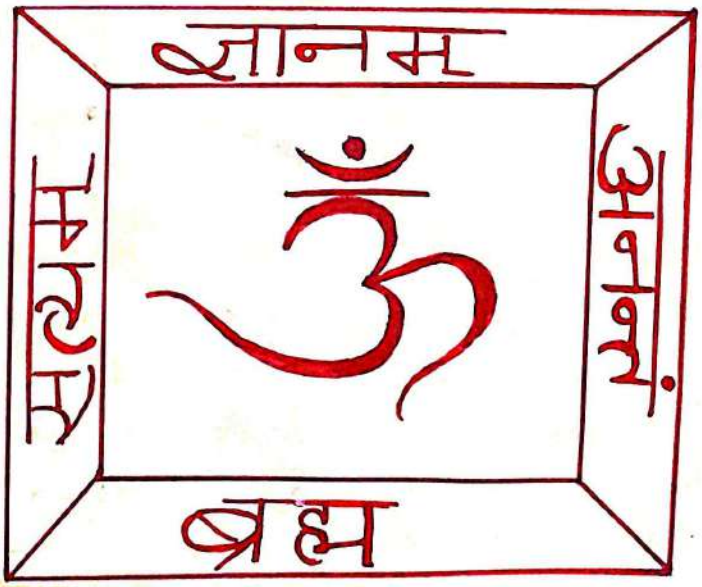

दरख़त
की
छाँव

संपादकीय

"दरख़्त की छाँव"

मैं वो दरख़्त हूँ जहाँ शाखों का डेरा है,
मेरी शाखों पर फलों का बसेरा है।

दरख़्त, जहाँ रहते हैं परिंदे कई रोज, फूलों का जहाँ सवेरा है।
मेरी झुरमुटों में छिपी कई शाम ढली
प्यार ने डाला जहाँ अपना बसेरा है।

दरख़्त प्रकृति का अनमोल उपहार है। ये प्रकृति की सुन्दरता का वर्णन करती है। प्राकृतिक अवस्था के अनुसार दो-दो महिने की छः ऋतुएँ वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर जैसी ऋतुएँ आ-कर प्रकृति का शोभायमान करती है। प्रकृति का दिया हुआ उपहार पेड़ हम सभी मनुष्यों के जीवन में उतना ही महत्व रखता है, जितना कि जीवित रहने के लिए सांसों का होना जरूरी होता है। वृक्ष जो ना केवल मानव जीवन के लिए अपितु पुरी प्रकृति के लिए अत्यंत ही लाभकारी सिद्ध है फिर भी ना जाने क्यूँ मनुष्य धन के लालच में अनजान बनकर घने पेड़ को कटवा कर बड़ी-बड़ी व्यवसायिक क्षेत्र का निर्माण करवा लेते हैं। परन्तु ऐसा करके मनुष्य अपने ही जीवन की विनाश की प्रक्रिया में भाग ले रहे हैं। पेड़ आजीवन मानवों के लिए लाभकारी सिद्ध होते हैं और यदि उन्हें काट भी दिया जाता है तब भी वे हमारे भले के काम में ही आते हैं। इसलिए कहा गया है:-

"तस्मात तड़ागे सद्वृक्षा रोप्याः श्रेयोऽर्थिना सदा,
पुत्रवत परिपाल्याश्च पुत्रास्ते धर्मतः स्मृताः ॥"

अर्थात जो मनुष्य कल्याण चाहता है उसे अच्छे छायादार वृक्ष लगानी चाहिए और फिर अपने पुत्रों की तरह पालन पोषण करना चाहिए क्योंकि धर्म के अनुसार पेड़ों को ही पुत्र माना गया है। पेड़ों का महत्व पुराने जमाने से ही रहे हैं। हिंदु धर्म में ये भी मान्यताएं है कि कई प्रकार के पेड़ों में देवता भी निवास करते हैं। वृक्ष अपने हर रूप में मानवों के लिए हितकारी होते हैं। इनका हर एक भाग चाहे तना हो जड़ फूल, फल या पत्तियाँ हर किसी का उपयोग किया जाता है।

इस पत्रिका के माध्यम से समाज को जागरूक करने में एक छोटा सा प्रयास करना चाहेंगी ताकि सभी को वृक्ष का महत्व पता चल सके क्योंकि पेड़-पौधे को ही जीवनदाता कहा जाता है और इसके बिना धरती पर जीवन संभव नहीं है।

अगला संस्करण

"आने वाला है"

दरख्त की छाँव

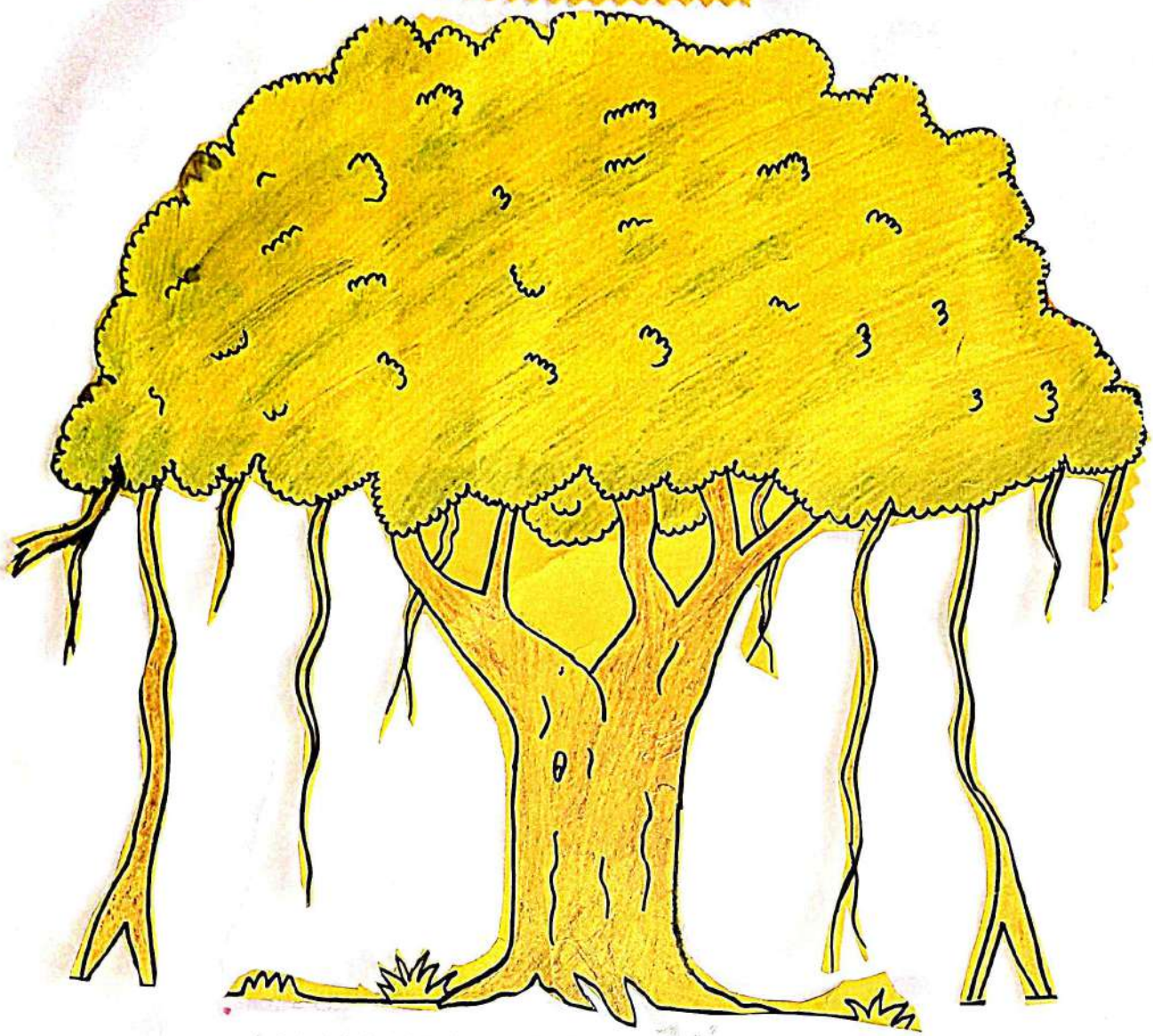

मैं हूँ पेड़ मुझे मत काटो
टुकड़े - टुकड़े में मुझे मत बाँटो ।।
दर्द मुझे भी होता है
मेरा मन भी रोता है
मैं हूँ मित्र तुम्हारा
सखा हूँ सबसे न्यारा ।।
मेरे फल खुद नहीं खाता हूँ
सब तुम्हें ही तो दे जाता हूँ
जहरीली गैस भी पी जाता हूँ ।।
सूरज का भी ताप सहूँ
मैं हूँ जीवन का आधार
फिर भी तुम मुझ पर करते प्रहार ।।
सुनो बात तुम कान लगाकर
वृक्षों का करना सम्मान
मैं हूँ जीवन का आधार ।।

Name:- Rinki Kumari
Roll No! - 110 (B.Ed)

दरख्त की छाँव

हरे भरे ये पेड़ बड़े
हरदम रहते हैं ये खड़े
बारिश में ये खूब नहाते,
डाली - डाली फूल
खिलाते।
तेज धूप से सबको बचाते
हम छाया में इनकी सुस्ताते,
मीठे फल ये हमें खिलाते
परोपकार का पाठ सिखाते....

Name :- Shiwani Shri
Roll :- 12 - 'B'

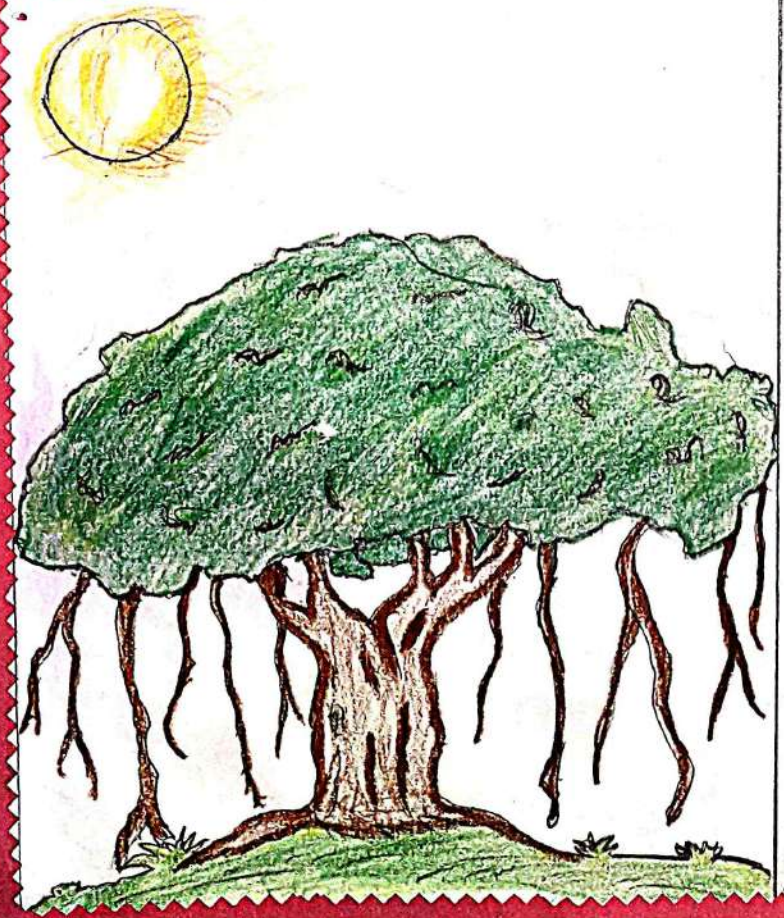

दरख़्त की छाँव

साये मे जिसके रहमत और इनायत है।
जननी है जो हर शाखो, बस वही दरख्त है।।

दरख्त तेरे साये से हमने माँ सा आँचल पाया है।
हर रिश्ते की धुरी है जो तू वही औरत है।।
सीखो सलीका जीने का इन दरख्तो के साये है।
धूप हो या छांव इन्हे दोनो से मुहब्बत है।।

जिन दरख्तो का नही कोई, उन्हे दिल से लगाओ
इनकी दुआओ मे खुद, खुदाओ सी बरकत है।।

सूखी दरख्तो के दिल पे कभी आरी ना चलाना
बहते है जो इन आँखों, ये उनके दिल का रक्त है
दरख्तो के छांव मे तुम वक्त गुजार के देखो
इनकी बाँहो मे बस जन्नत ही जन्नत है।।

द्वारा
श्वेता कुमारी
रोल नं - 24
सेक्शन — बी

दरख्त की छाँव

मैं वो दरख्त हूँ जहाँ शाखो का डेरा है,
मेरी शाखों पर पत्तो का बसेरा है।
जहाँ रहते हैं परिंदे कई,
रोज फूलों का जहाँ सबेरा है।
मेरी झुरमुटों में छिपे कई शाम ढली,
प्यार ने डाला जहाँ अपना बसेरा है।
इतनी कमजोर नही मेरी शाखे,
मुझे झुकने की आदत है सदा,
मैंने तुफानो को कई झेला है।

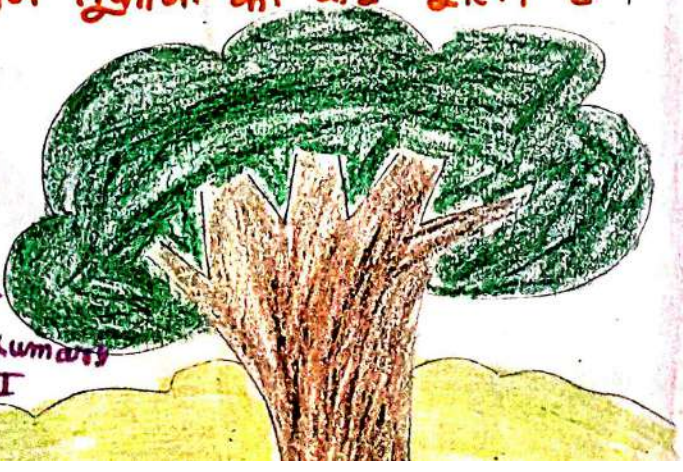

Name:- Anju Kumari
B.Ed Sem-I
13(A)

दरख्त की छाँव

दरख्त की छाँव

बूढ़े दरख्त को छांव के लिए
तरसते देखा है
आंखों से बिन बादल सावन बरसते
देखा है।
संग कारवाँ जमाने का महफिलें
सजती रही
दौर-ऐ-जरा में तन्हाई को
सिसकते देखा है।

पूनम कुमारी पाण्डेय
Roll No. 93
B.Ed. Sem. I

SHANIYA JAHAN
B.Ed - Sec - C
Roll no - 189

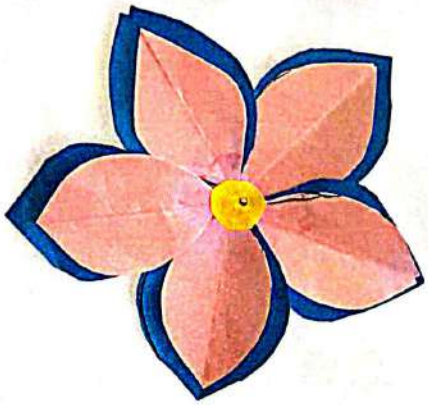

By: SHANIYA JAHAN
B.Ed Sec - C
Roll - 189

दरख्त की छाँव

दरख्त की छाँव

दरख्त की छाँव

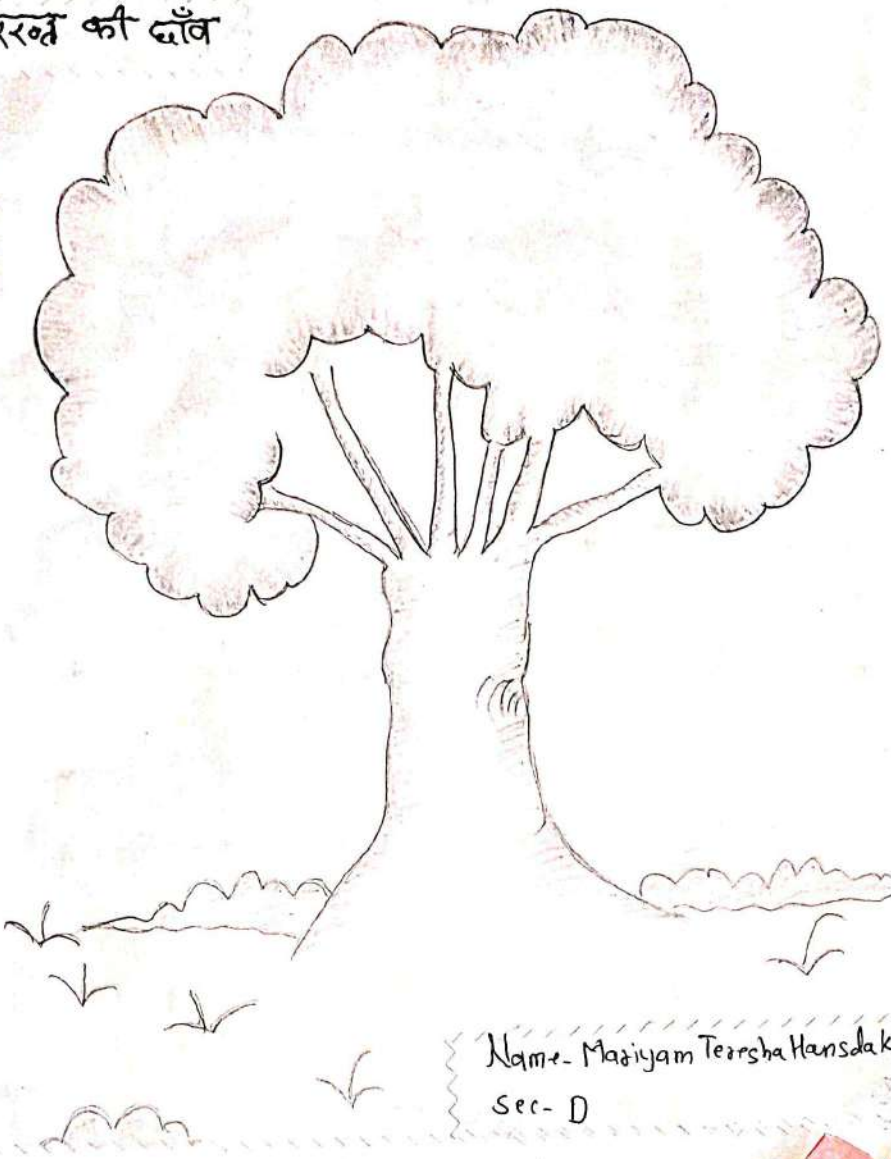

Name- Mariyam Tearsha Hansdak
Sec- D

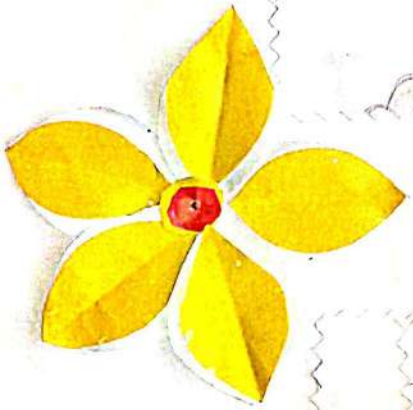

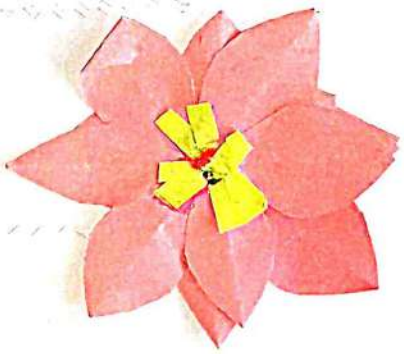

Darkhat Ki Chaon

Name - Raj Laxmi
Roll no - 187
Sec - 'C'

दरख्त की छाँव

दरख्तों की राहों से जब मैं न होकर भी गुजरती हूँ, तब वो सवेरा याद बहुत आती मुझे।

राह के दोनों तरफ दरख्तों का का खड़ा होना अपने पत्तों के हवाओं के झोंको से मेरे मन को और भी आनन्दित कर देना याद बहुत आती मुझे।

दरख्तों की राहों से जब मैं न होकर भी गुजरती हूँ, तब वो सवेरा याद बहुत आती मुझे।

"हम हमारा साथ अपना स्वर्ण युग था हमारा," दरख्तों के कहीं पत्ते तो कहीं फूल इस तरह बिखरे पड़े थे, जैसे स्वागत कर रहा हो हमारा।

दरख्तों की राहों से जब मैं न होकर गुजरती हूँ, तब वो सवेरा याद बहुत आती मुझे।

दरख्तों से है गुजारिश मैं फिर तुम्हारे घनी छाँवों में, चाहती हूँ चलना, हम हमारा साथ अपना स्वर्ण युग लौट आये हमारा, स्वर्ण युग लौट आये हमारा...।

दरख्तों की राहों से जब मैं न होकर भी गुजरती हूँ तब वो सवेरा याद बहुत आती मुझे...।

Swetakumari
Roll – 98
Class – B.Ed. Sem-1
Sec – 'B'

स्व रचित

Swetakumari
Roll – 98
Class – B.Ed. Sem-1
Sec – 'B'

दरख्त की छाव

मैं वो दरख्त हूं जहाँ साखो का देरा है;
मेरी शाखो पर पत्तों का बसेरा है।
जहाँ रहते है परिंदे कई,
रोज फूलो का जहाँ सवेरा है।
मेरी झुरपटों में छिपे कई शाम ढली,
प्यार ने डाला जहाँ अपना बसेरा है।
इतनी कमजोर नही मेरी शाखें,
मुझे झुकनें की आदत है सदा,
मैंने तुफानों को कई झेला है।

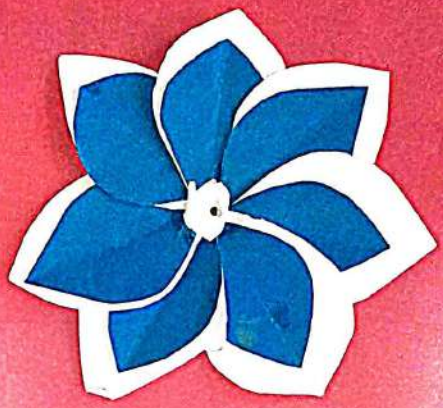

नाम - मुन्नी कुमारी
रोल नं - 105

दरख्त की छाँव

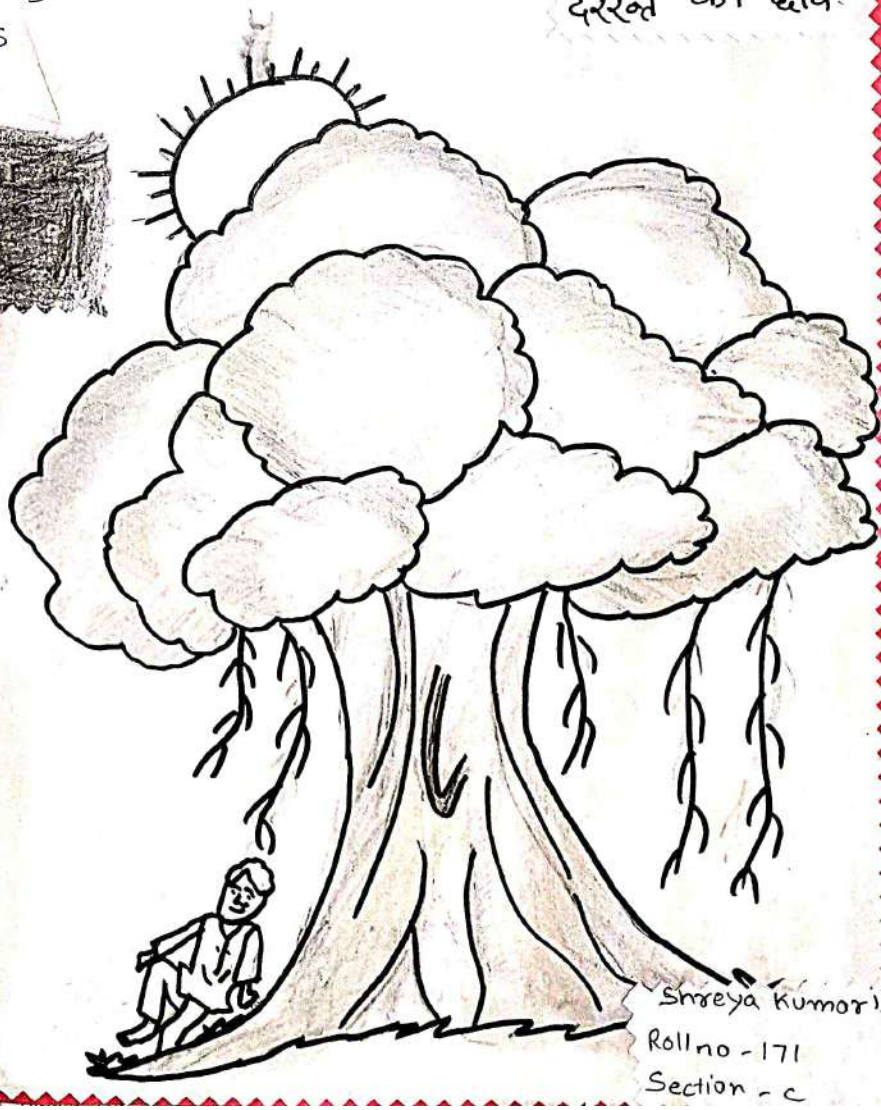

Shreya Kumari
Rollno - 171
Section - c

दरख्त की छाँव

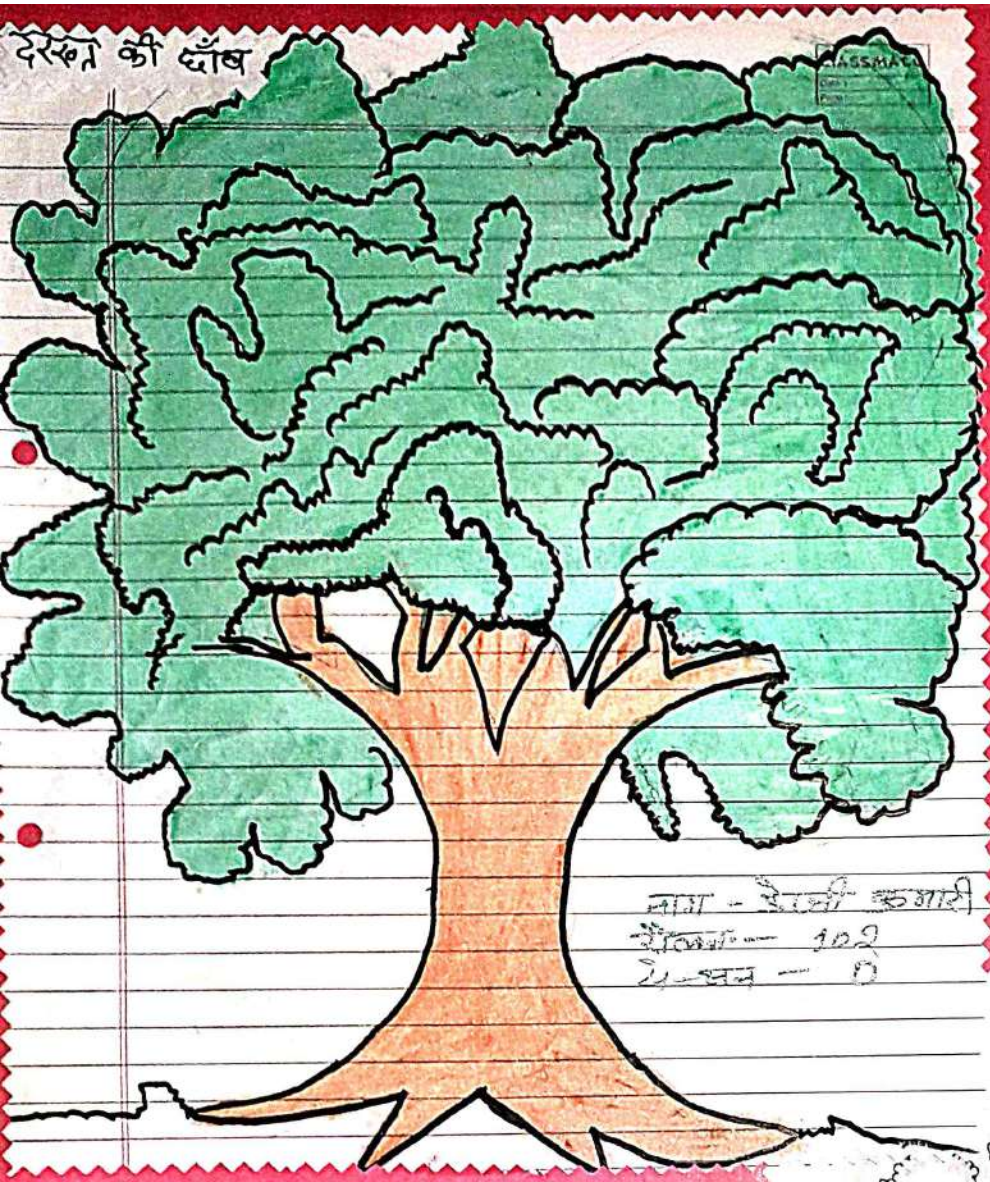

दरख्त की छाँव

Name - Premlata Hansda
B.Ed. (2022-24)
Roll no. 146
Section. 'D'

दरख्त की छाँव

मैं वो दरख्त हूँ जहाँ शाखों का डेरा है,
मेरी शाखों पर पत्तों का बसेरा है।
जहाँ रहते हैं परिंदे कई,
रोज फूलों का जहाँ सवेरा है।

मेरी झुरमुटों में छिपे कई शाम ढली
प्यार ने डाला जहाँ अपना बसेरा है
इतनी कमजोर नहीं मेरी शाखें,
मुझे झुकने की आदत है सदा
मैंने तुफानों को कई झेला है।

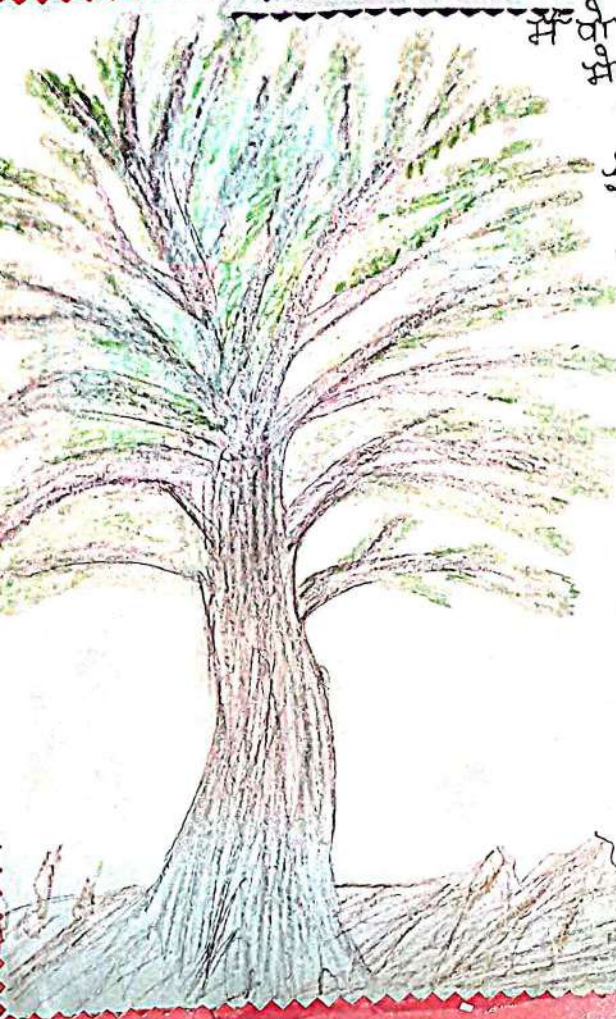

Lovely Kumari
Rollno - 53
B.ed sec 'A'

दरख्त की छाँव

दरख्त की छाँव

Roll No-84

दरख्त की छांव

Name - Christy murmu
class - B.ed section 'A'

दरख्त की छाँव

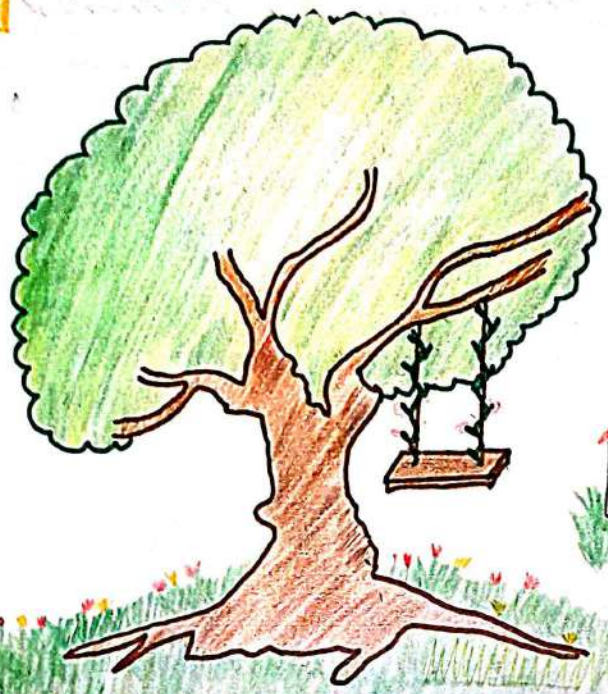

Maharani Meerme
Rollno - 166
Section - D
Session - 22-24

दरख्त की छाँव

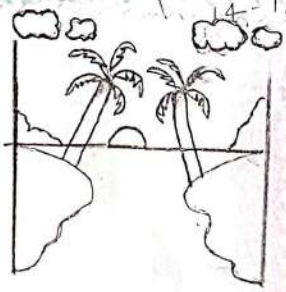

DARKHAT KI CHAON

इन सूखे दरख्त की छाँव में
अब कोई पंथी न रुकता,
इन तरुवर की मरने पर
पंछी भी रोया न करता है, —

हर पथिक को शीतल छाया दी
जब आलू हुआ तो वह लगता है,
जो दौड़ा - दौड़ा आता है
व धूप और बारिश से बचपन,

हरियाली खोने की
अपनों में गैरों सा दिखता,
अब मैं पथिक निहार रहा हूँ
इस पथ पर ना मुड़ा,

उस दर्द की कोई क्या जाने
जो अपनों से दिल को लगाता है,
वह घाव हरा भी रहता है
जो अपनों से है मिलता,
इन बाधित दरख्त की छाँव में
अब कोई पंथी ना रुकता!

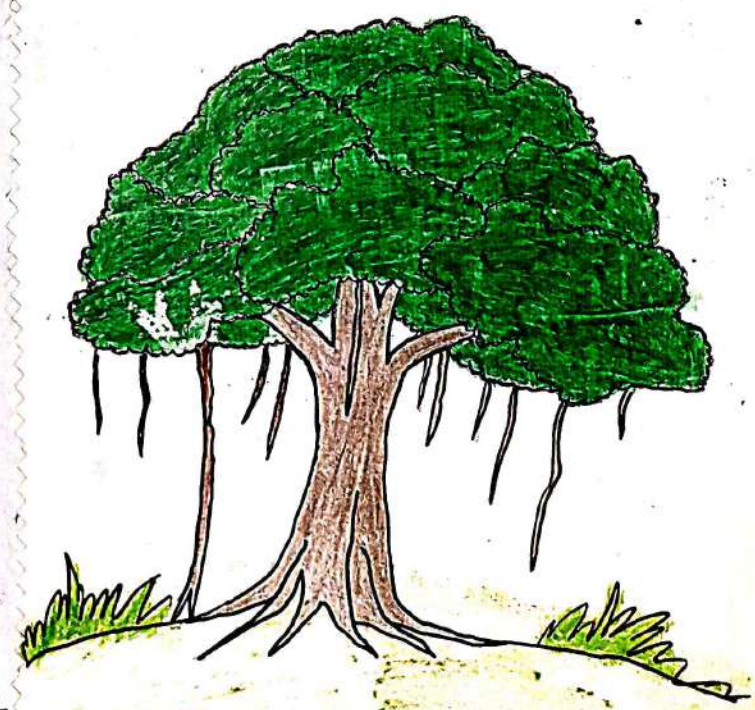

Meenakumari
Sec (B) Roll No-80

Roll no - 111

दरख्त की छाँव

Name:- Neli Santoshini Murmu
B.Ed. (2022-24), Roll No.- 144, Sec.-'D'

दरख्त की छाव

"कल थी दरख्त की छाँव,
हरे नज़ारे,
खिलखिलाते फूलों
के बगीचे,

साफ़ नीला आसमान,
और सपनों से भरी मेरी
टिमटिमाती आँखें,

आज उजड़े दरख्तों के तले
ख़ुश्क पत्ते, नीले, पीले नारंगी
नज़ारे, हरतरफ बैंगनी
माहौल और क्षीण सी रोशनी
मेरे नयनों में

....पतझड़ दस्तकें दे चुकी
है"

Name- Niyati Kumari
Sec - (B)
Rollno - 56

दरख़्त की छाँव

" धरती की बस यही पुकार.
पेड़ लगाओ बारम्बार
आओ मिलकर कसम खाएँ,
अपनी धरती हरित बनाए।
धरती पर हरियाली हो,
जीवन में खुशहाली हो
पेड़ धरती की शान है,
जीवन की मुस्कान है।
पेड़ पौधों को पानी है,
जीवन की यही निशानी है।
आओ पेड़ लगाए हम,
पेड़ लगाकर जग महकाकर,
जीवन सुखी बनाए हम,
आओ पेड़ लगाएं हम।

Name - Kajal Kumari Raut
Rollno - 64
Sec - 'B'

दरख़्त की छावं

" आज उजड़े दरख्तों के
तले ख़ुश्क पत्ते,
पीले नारंगी नज़ारे,
हरतरफ बैंगनी
माहौल और क्षीण सी
रोशनी मेरे नयनों में
पतझड़ दस्तक दे चुकी है "

Name - Ritu Rani
Class - 'A' '01'

Shadow of a tree · दरख़्त की छाँव

The shadow of a tree is a sight to behold,
Its branches spread wide with stories untold.
From the mighty trunk to the leaves that rustle,
It stands tall, making our hearts hustle.

Under its shade, We seek refuge from the sun,
The gentle breeze makes us feel like we've won.
The rustling of leaves and chirping of birds,
Nature's symphony, that needs no words.

The shadow of a tree, a symbol of strength,
Its roots run deep, and its shade extends a great length.
A home for creatures big and small,
A haven for all, be it one or all.

With each passing day, it grows ever so tall,
Its beauty untouched standing proud, and never to fall.

The shadow of a tree, a sight to adore,
It's a treasure, a gift, and so much more.
May it forever stand in all its glory,
A symbol of nature's love story.

:- Priyanka mehta
Sec 'D'
Roll no :- 136

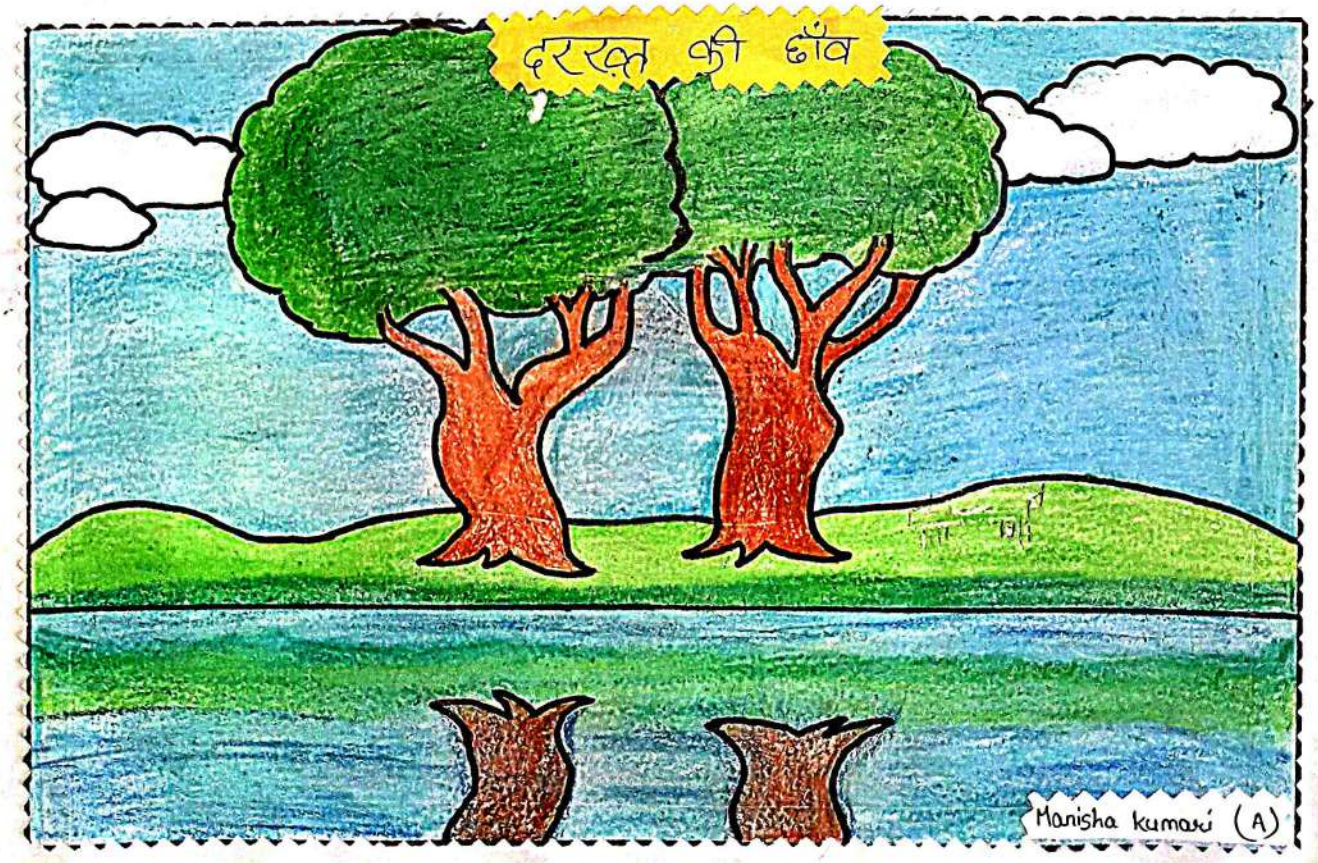

दरख़्त की छांव

दरख़्त की छांव, सदियों से मुस्तकी हैं
पूछूँ मैं-ऐ वादियाँ तू क्यों बदल गयी
जो बात पहले बहार में थी,
वो बात अब क्यों ना रही
जाओ दरख़्त से सीखों जीने की कला
छांव बेशक ठंडी देता फिर भी है धूप सहता
गुजारिश करो इस घने दरख़्त से जनाब
सिखा दे सलीका जीने का
हौंसलों की बारिश में भी,
पुलिंदा बाँध ख्वाहिशों का, ले चले
ख्वाबों के रास्ते और हौले से
हौंसला रख हासिल हो सुकून
उस दरख़्त की छांव में।

— प्रिया (Roll No- 51(A) (22-24)

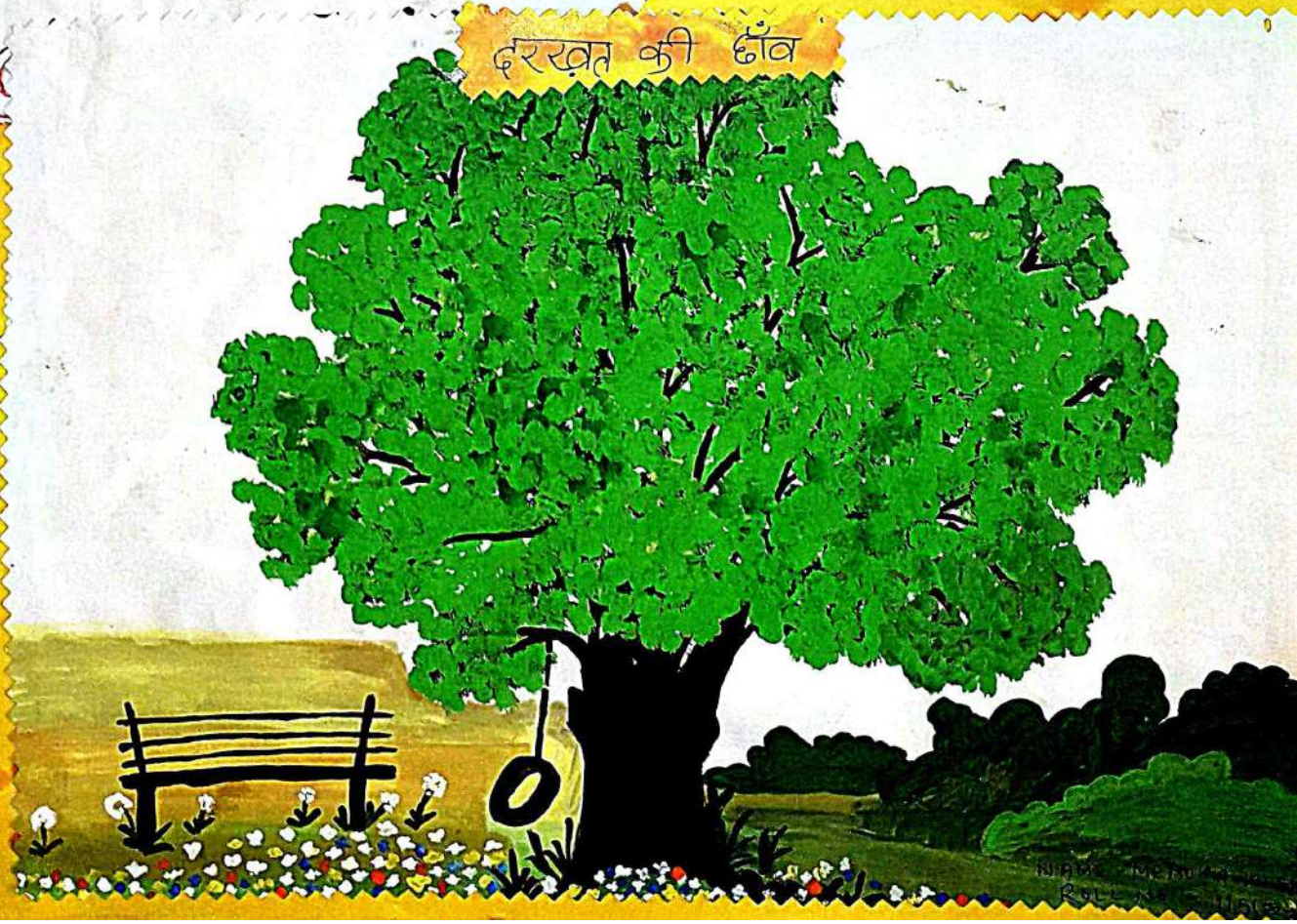

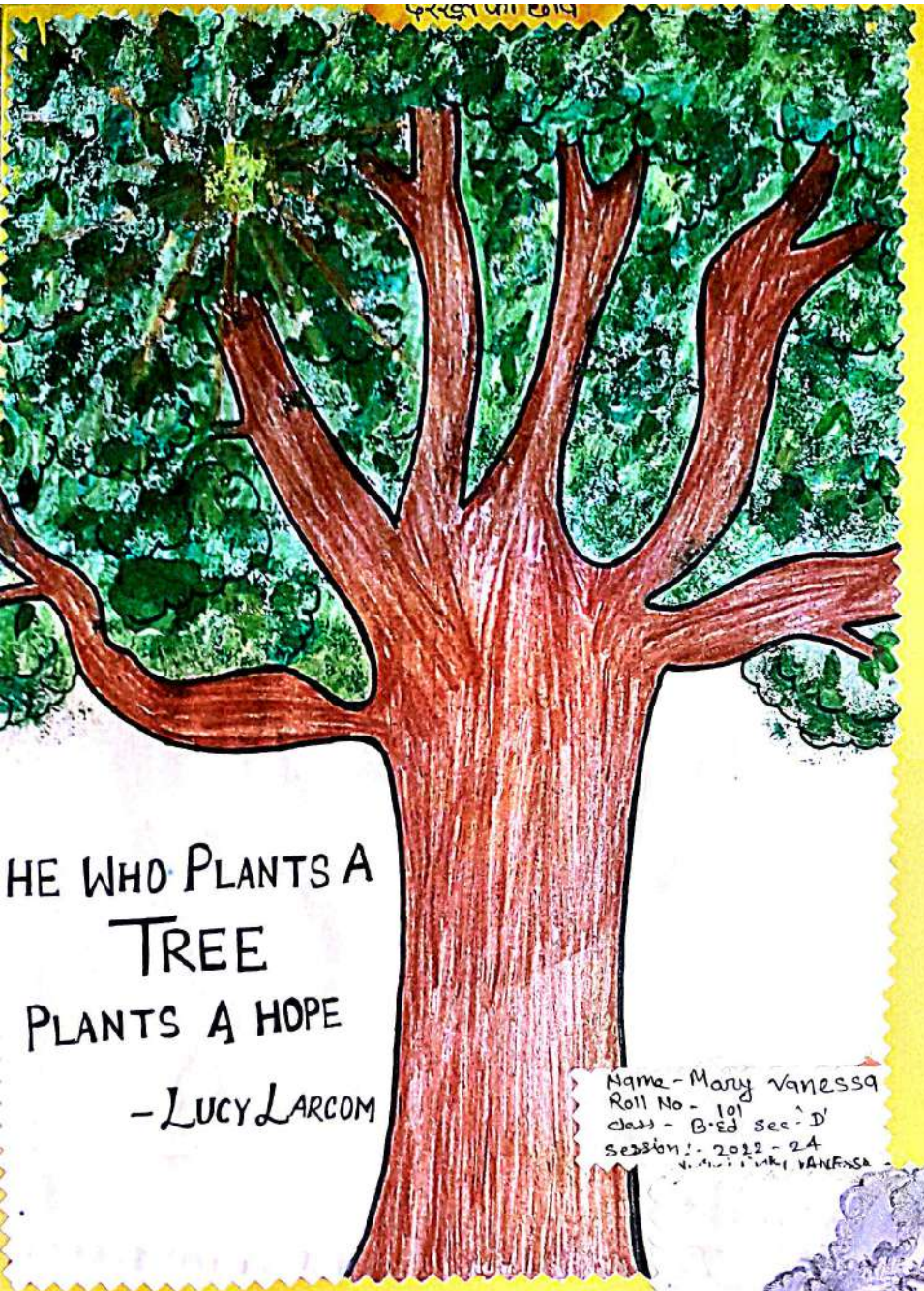

HE WHO PLANTS A
TREE
PLANTS A HOPE
- LUCY LARCOM
Name - Mary Vanessa
Roll No - 101
class - B.Ed Sec - 'D'
Session :- 2022 - 24

दरख़्त की छाँव
Sapna Kumari
Roll No - 67
Sec - A

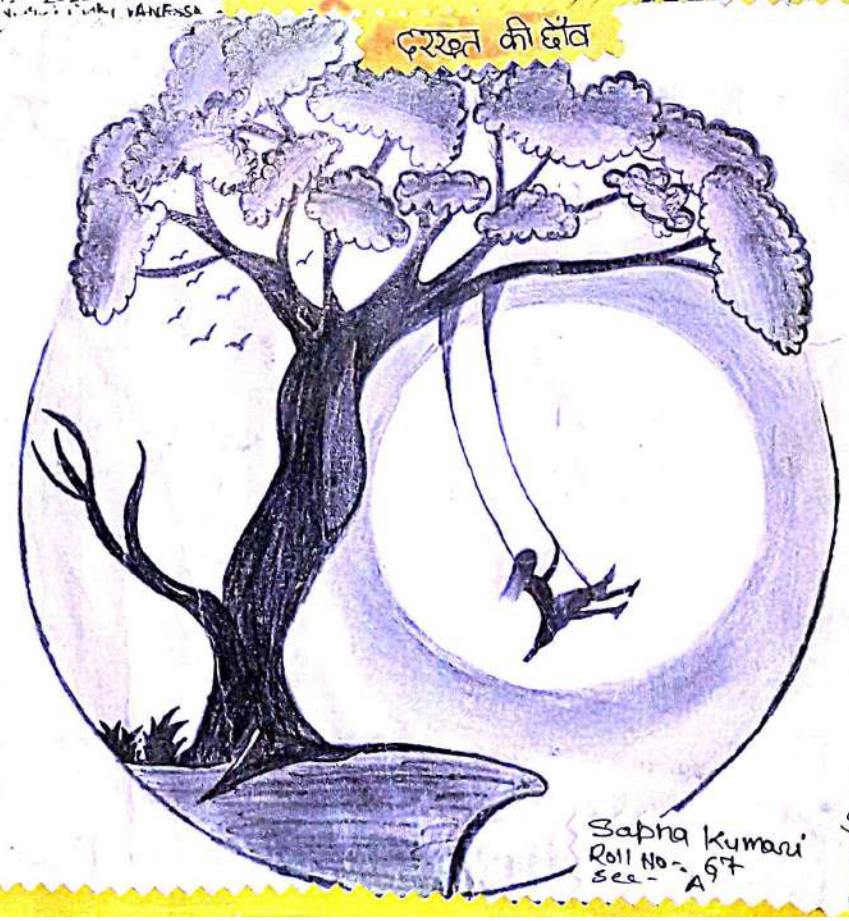

दरख़्त की छाँव
Menoka kisku
Roll no. - 115

Name - Vaishali Kumari
Roll - 140
Sec - 'D'
B.Ed
दरख़्त की छाँव
दरख्त की छाँव

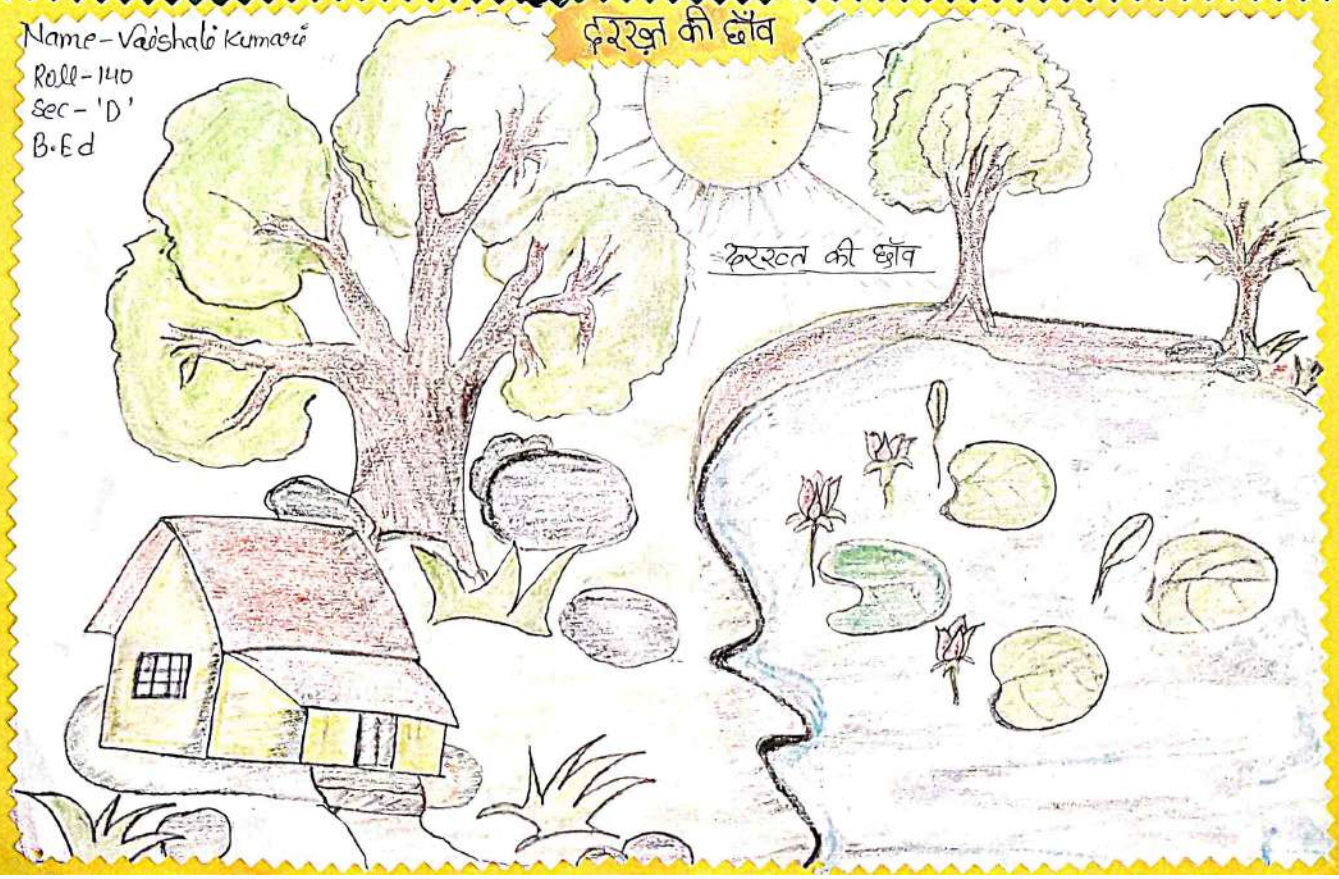

दरख़्त की छाँव

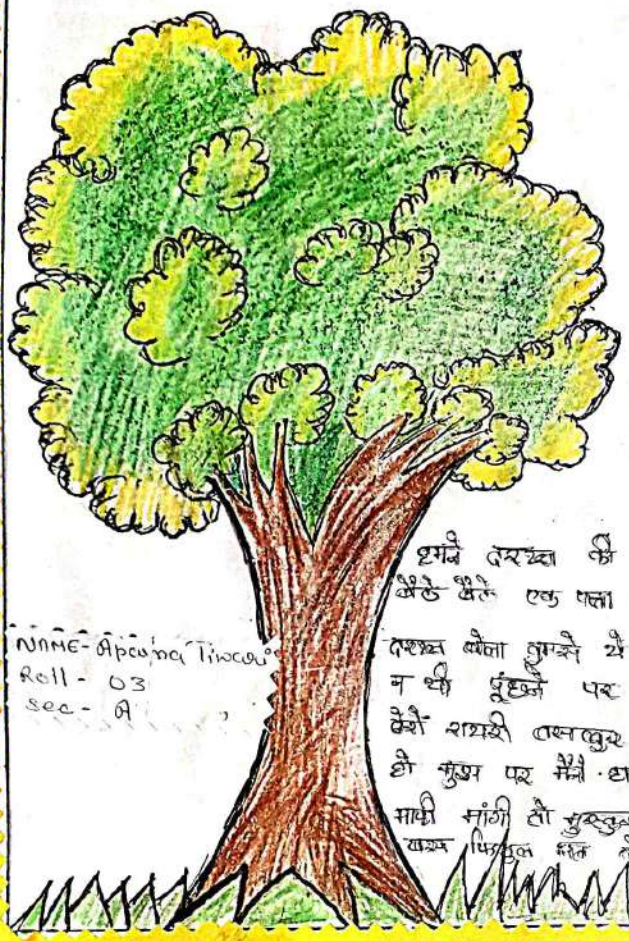

इमली दरख्त की छांव में
बैठे बैठे एक पत्ता टूट गिरा
दरख्त बोला तुमसे ये उम्मीद
न थी पूछने पर बोला
कैसी शायरी तसव्वुर कर के
हो मुझ पर मैंने छाप छोड़कर
माफी मांगी तो मुस्कुराकर बोला
यार फिजूल मत सोचना।

NAME- Aparna Tiwari
Roll - 03
sec - A

दरख्त की छाँव

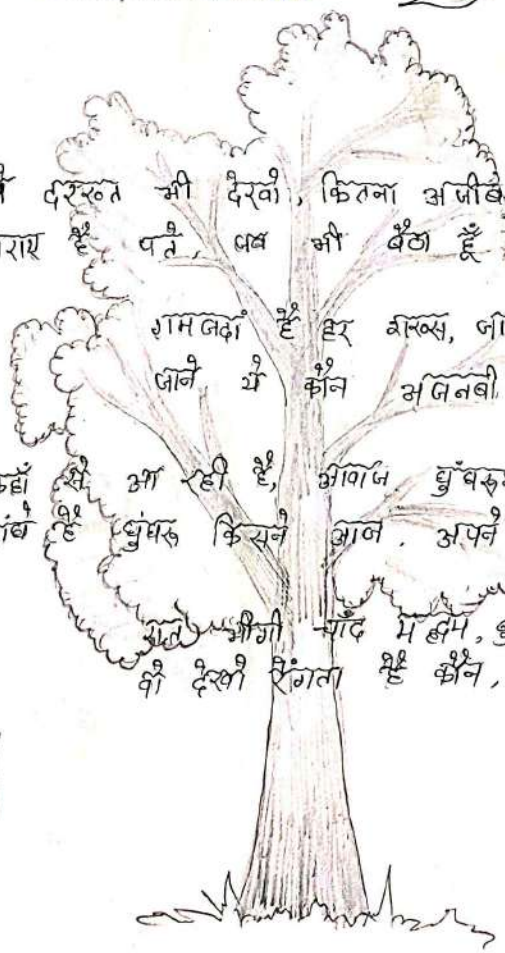

ये दरख्त भी देखो, कितना अजीब है।
गिराए हैं पत्ते, जब भी बैठा हूँ छाँव में !!

शामजदा है हर शख्स, जाने क्यूं इस तरह
जाने ये कौन अजनबी, आया है गांव में।

कहाँ से आ रही है, आवाज घुंघरुओं की।
बांधे हैं घुंघरू किसने आज, अपने पांव में।।

रात भीगी चाँद मद्धम, बुझने को है दिया।
तो देखो रेंगता है कौन, दिये की।।

KIRAN KUMARI SOREN
Roll - 116 'D'

दरख्त की छाँव

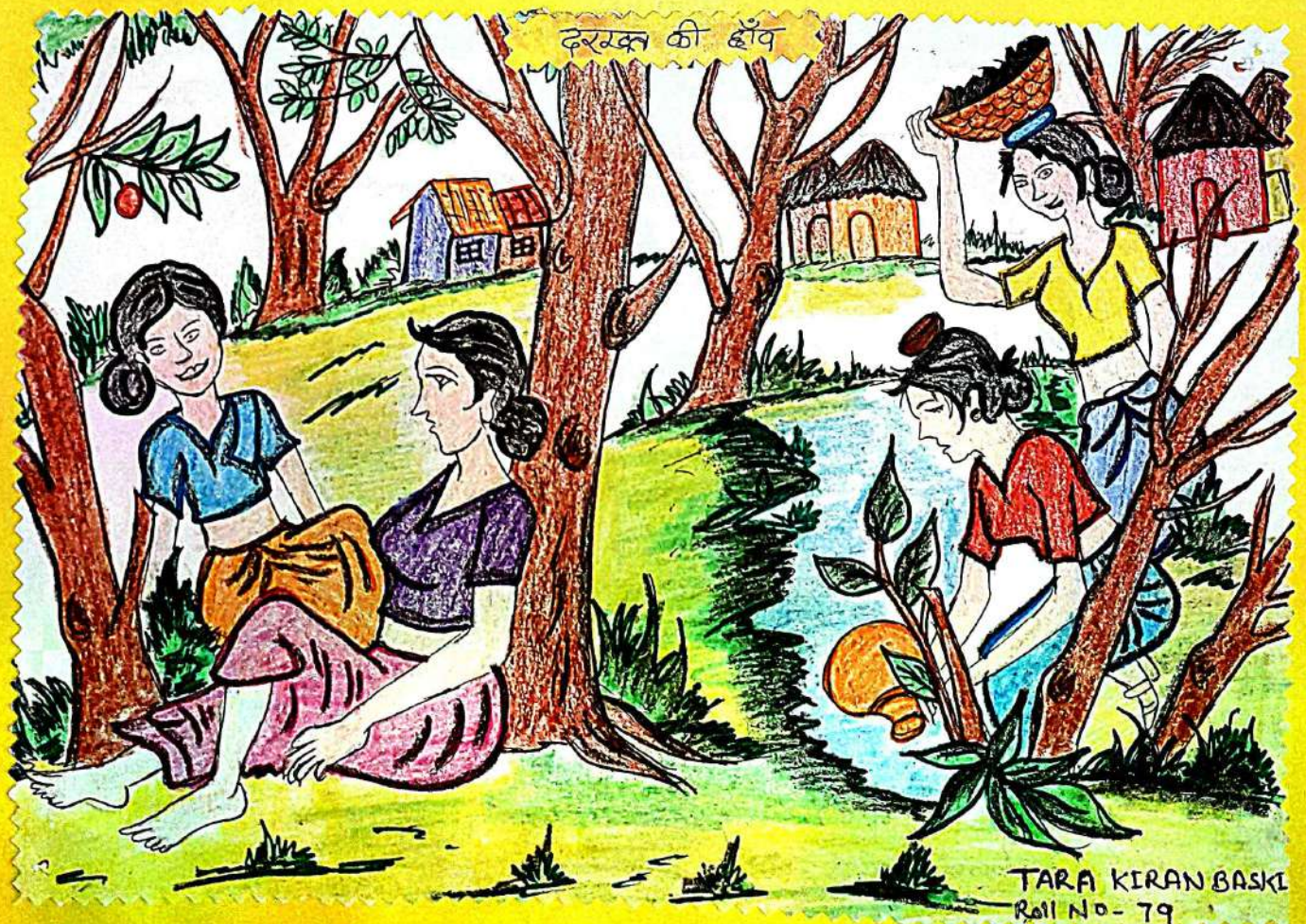

Dar दरख्त की छाँव ...on

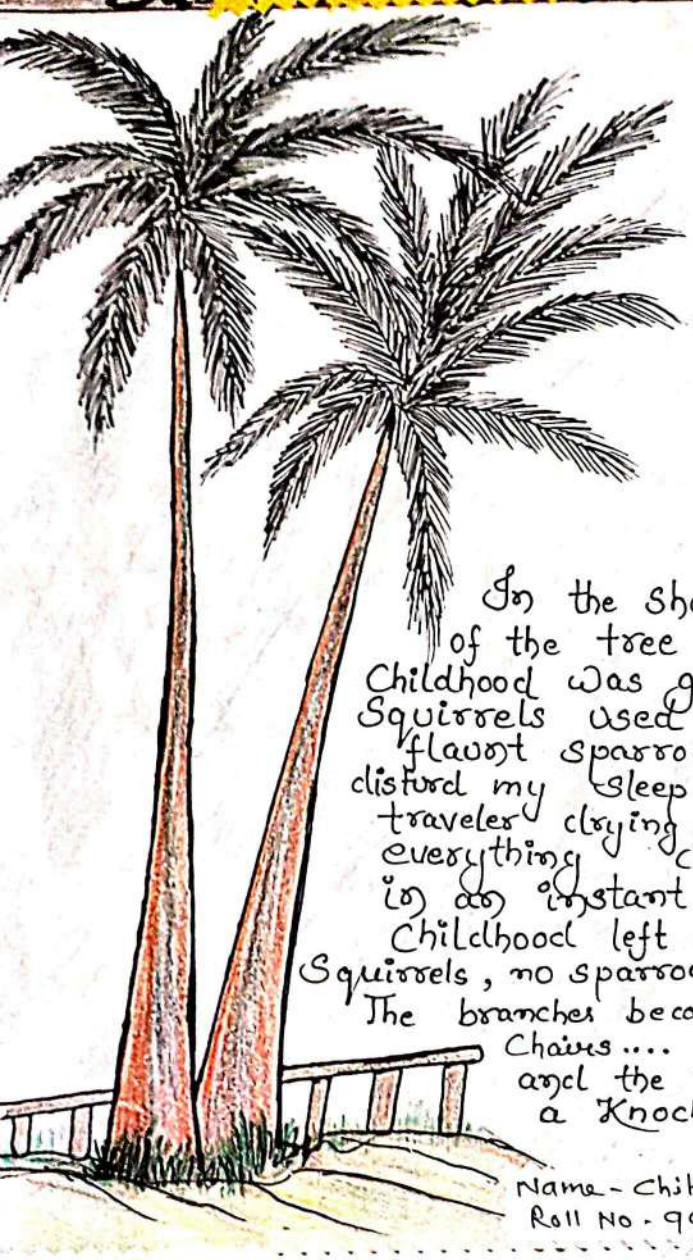

In the shade
of the tree
Childhood was good
Squirrels used to
flaunt sparrows also
disturd my sleep passing
traveler drying sweat
everything changed
in an instant no
Childhood left no
Squirrels, no sparrows.
The branches became a
Chairs....
and the tree
a Knock.

Name - Chiku Kumari
Roll No - 99

दरख़्त की छाँव

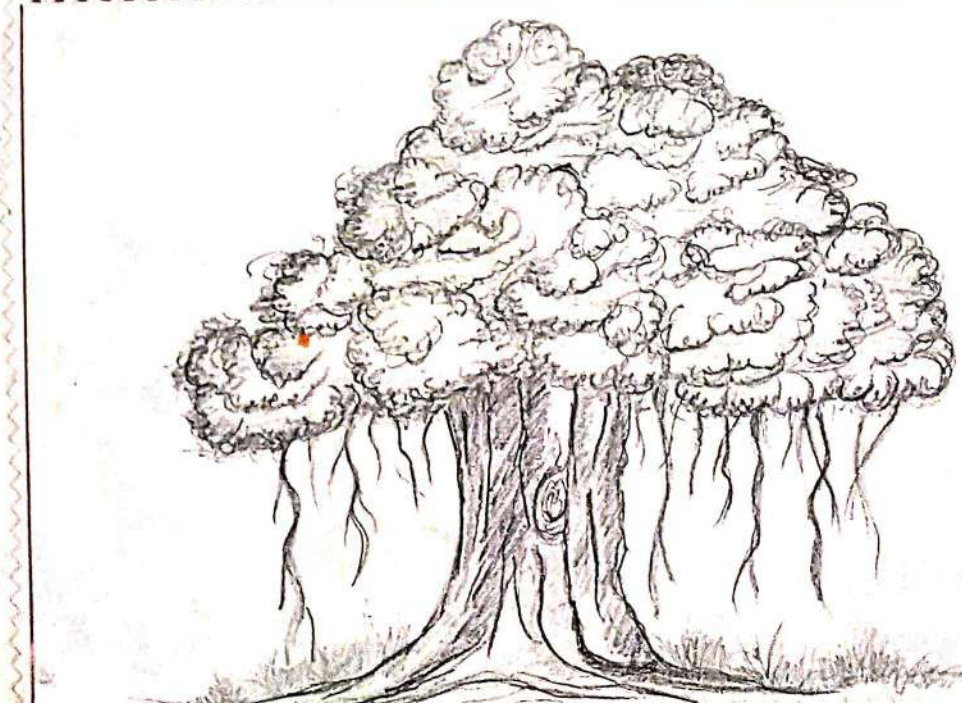

Name - Manisha Mishra
Roll no - 29

दरख्त की छाँव
Shreya Suman
B.Ed 'A'
35
(Cultural Secretary)

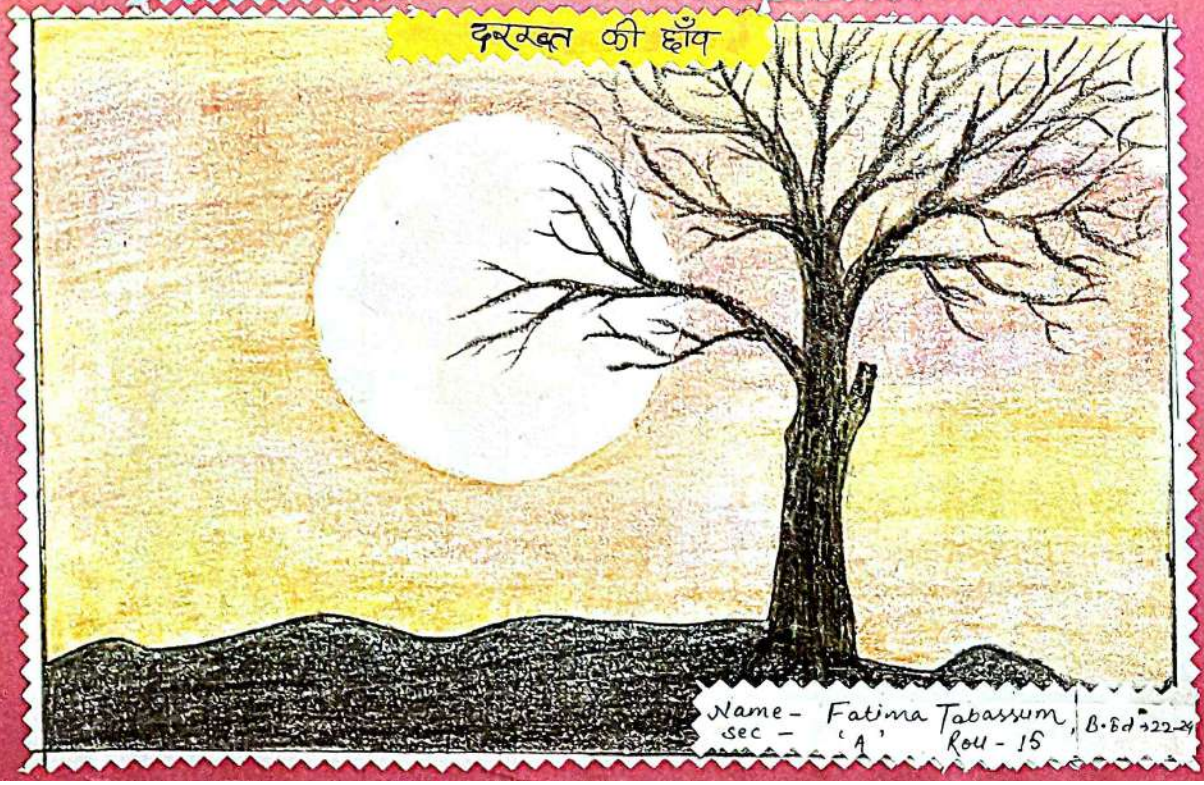
दरख्त की छाँव
Name - Fatima Tabassum
sec - 'A'
Roll - 15
B.Ed 2022-24

DARKHAT KI CHAON

दरख्त की छाँव

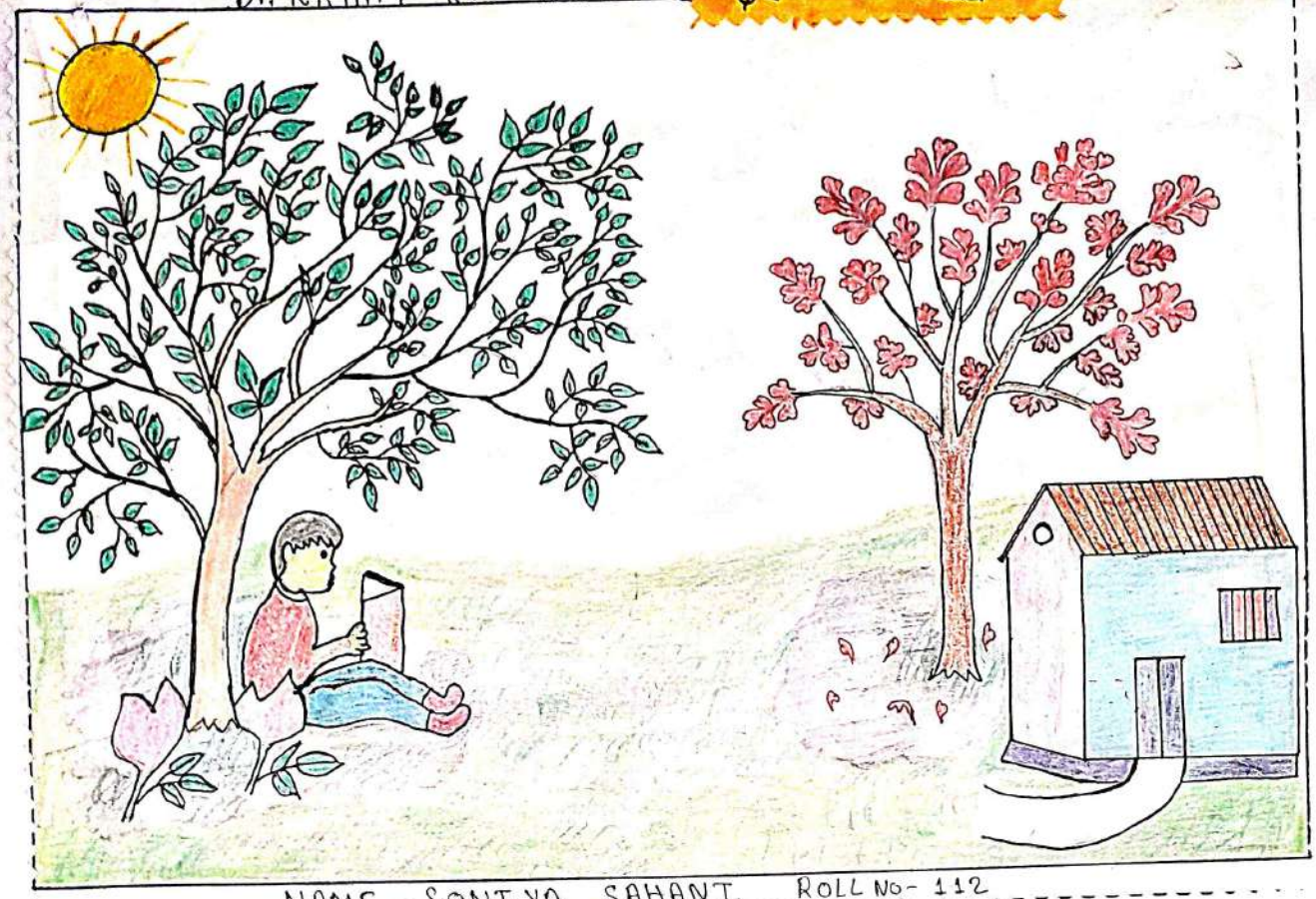

NAME - SONIYA SAHANI ROLL NO- 112

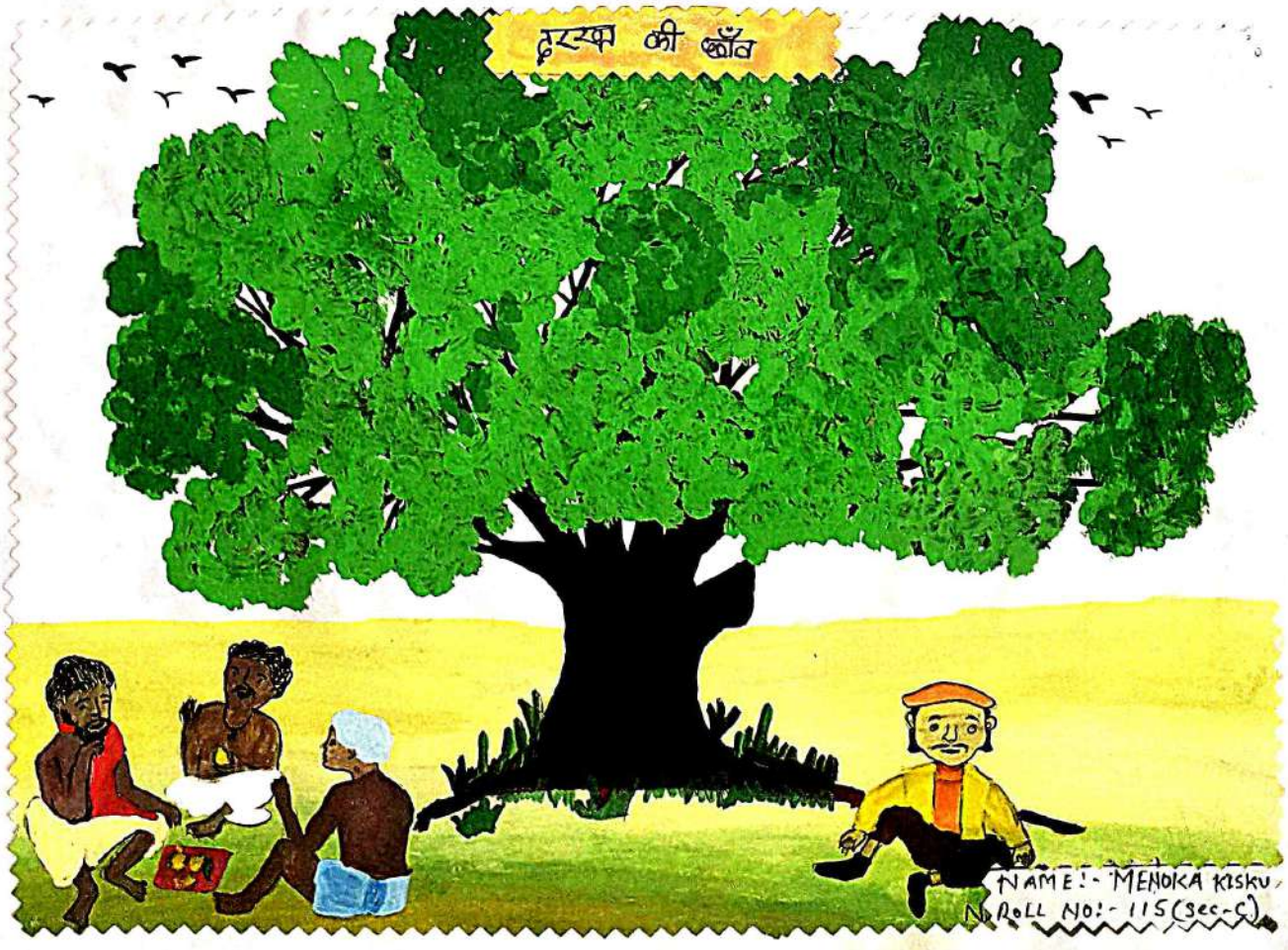

NAME:- MENOKA KISKU
ROLL NO:- 115(Sec-C)

दरख्त की छाँव
Name - ANU KUMARI.
Roll no - 137 'C'
B.Ed (Sem I)

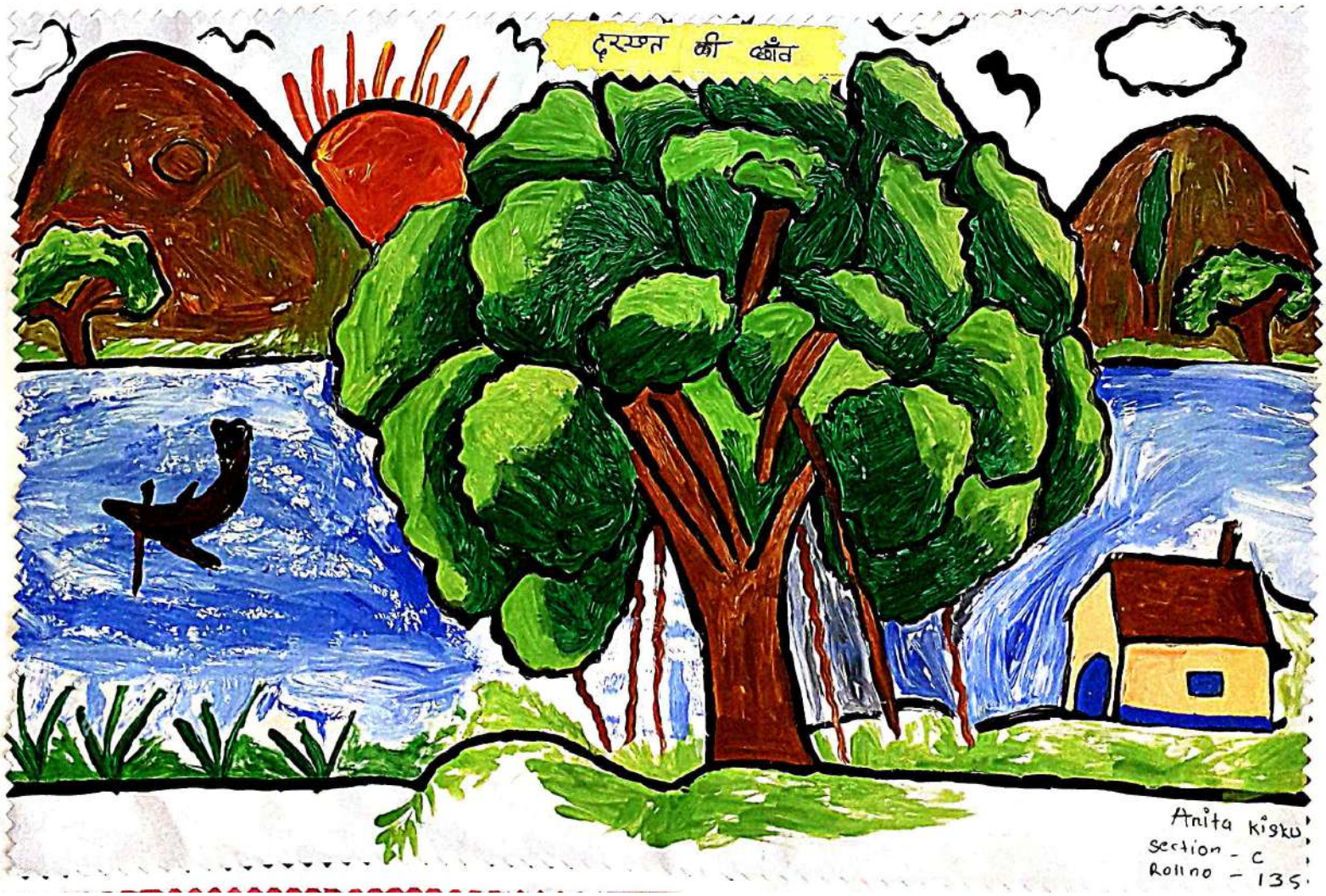

दरख्त की छाँव
Anita kisku
Section - C
Rollno - 135

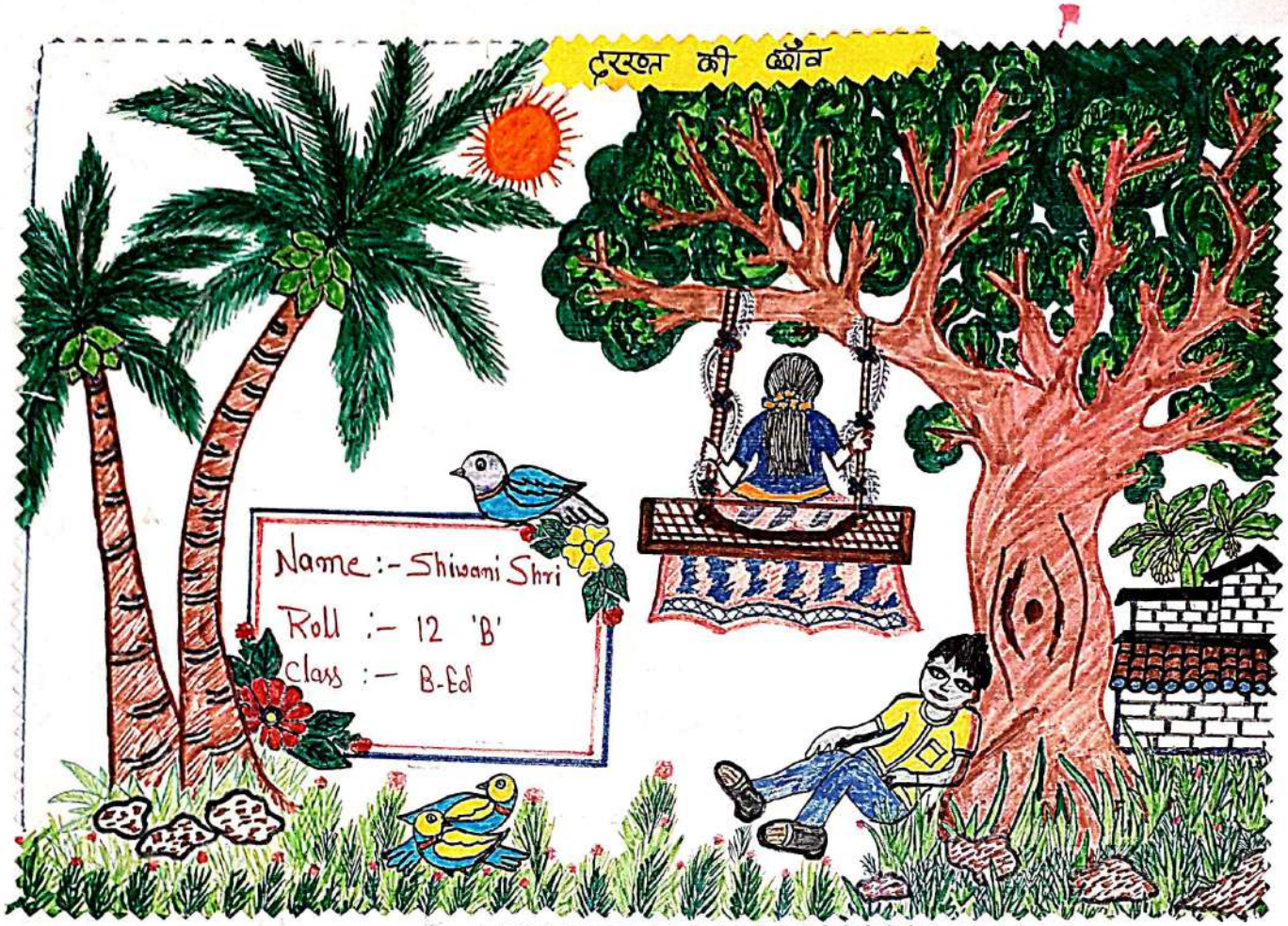
पेड़ की छाँव
Name :- Shivani Shri
Roll :- 12 'B'
Class :- B-Ed

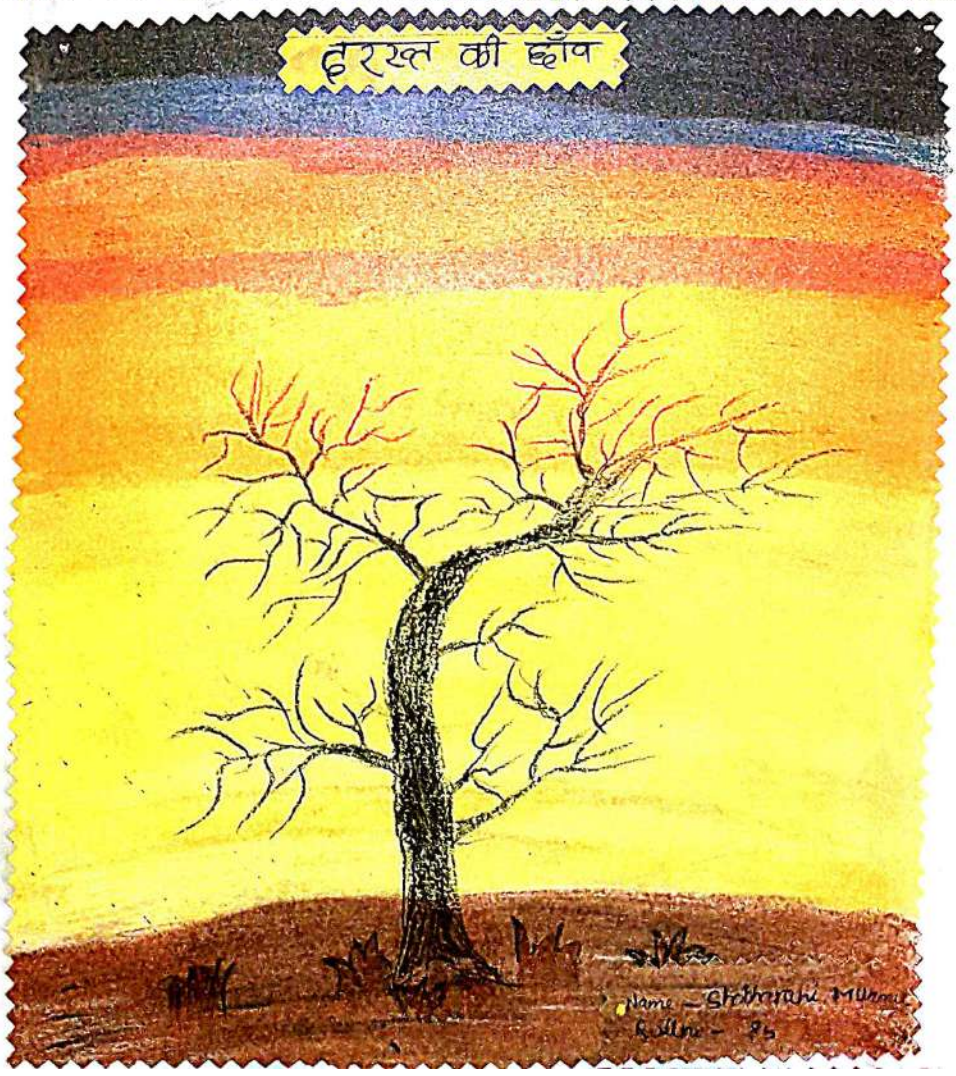
पेड़ की छाँव

Name:- Prity Tiwari
Sec- 'B'

दरख्त की छाँव

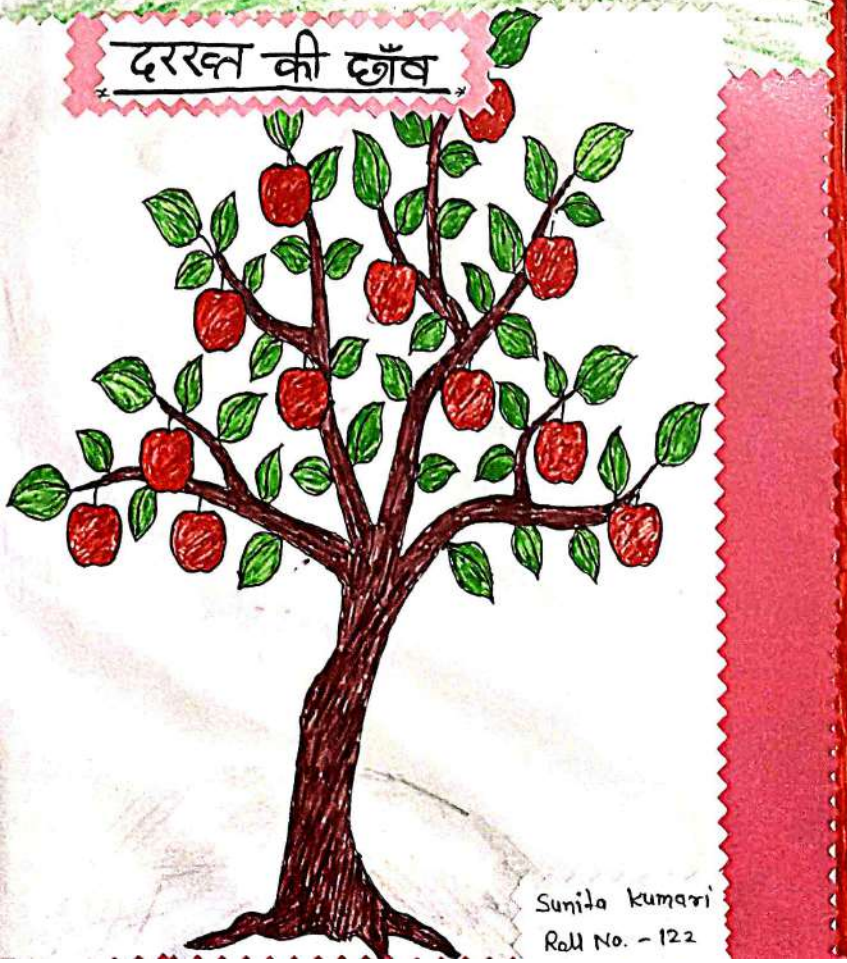

दरख्त की छाँव

Sunita kumari
Roll No. - 122

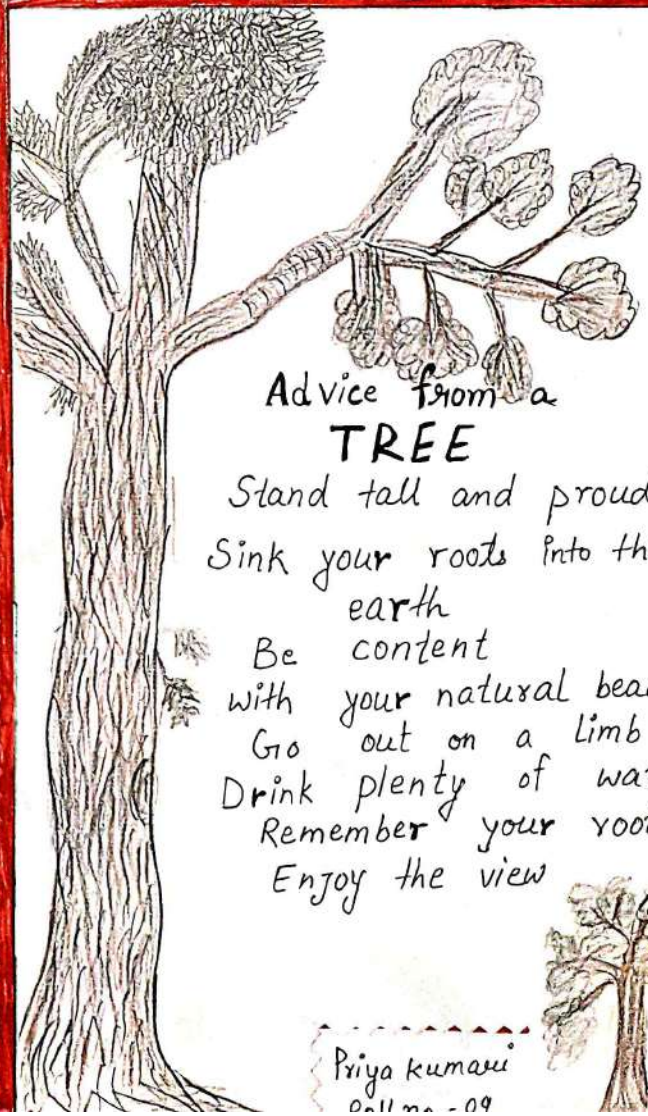

Advice from a
TREE

Stand tall and proud
Sink your roots into the earth
Be content with your natural beauty
Go out on a limb
Drink plenty of water
Remember your roots
Enjoy the view

Priya kumari

दरख्त की छाँव
Nam
Chiku Kumari
Roll No. 99 'A'
, Roll

दरख्त की छाँव

दरख्त की छाँव